संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ४८ ● २६ दिसम्बर २०१७ पौष शुक्ल पक्ष अष्टमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में– स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की उपयोगिता

– डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

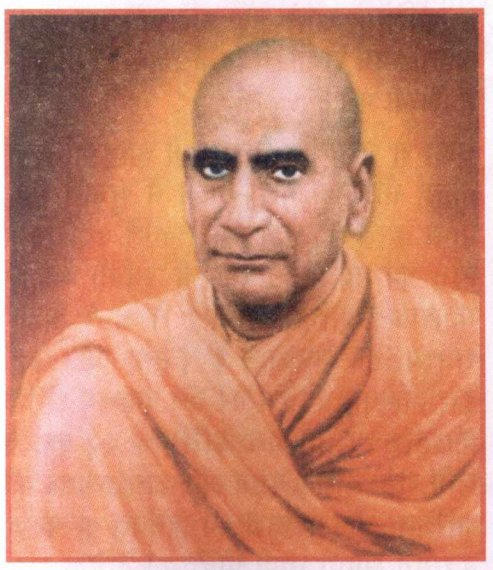

आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० के अन्तर्गत आर्य समाज द्वारा संचालित कई सौ विद्यालय एवं इण्टर कालेज हैं। वर्तमान सन्दर्भ में हम अपने आपको आर्य कहलाने वाले अपने बच्चों को कहां पढ़ाने में गौरवान्वित हैं? जब देश में भ्रूणहत्या –दहेजप्रथा–बलात्कार जैसे जंघन्य अपराध हो रहे हों जब आर्यसमाज के प्रहरी–अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्य जनसामान्य की तरह अपनी दिनचर्या में अपने व्यवहार में अपने क्रियाकलाप तथा योजनाओं में समर्पितभाव से अपनी पहचान न बना पाये तो फिर हम श्रद्धानन्द जी को प्रतिवर्ष बलिदान दिवस पर स्मरण कर लेना रामलीला में रावण वध के ही समान दिखाई देने लगता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम स्मरण करते ही एक विशालकाय व्यक्तित्व आंखों के सामने आ जाता है। उनके विचारों से देश और समाज की ऊर्जा प्राप्त होती है आपने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए तत्कालीन परिस्थितियों का अध्ययन किया और उसका समाधान करने की योजना तैयार की और क्रियान्वित करने के लिए अपने परिवार के भविष्य की चिन्ता किये बिना पूरी तन्मयता से समर्पित हो गए आज की राजनीति–धर्मनीति, समाज के वातावरण को देखते हुए तुलनात्मक अध्ययन करें तो स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे परिवार धर्म की रक्षा और वेद की रक्षा के लिए हम कितना समय तथा धन दे पा रहें हैं।

महात्मा मुंशीराम के रूप में स्थित जब स्वामी जी ने अपनी पुत्री कु० वेदवती के मुख से सुना कि

ईशा–ईशा, बोल–तेरा क्या लगेगा मोल।
ईशा मेरा राम रमैय्या–ईशा मेरा कृष्ण कन्हैय्या।

इन शब्दों को सुनकर स्वामी जी का ह्रदय वेदना से परिपूर्ण हो गया और तत्काल ला० देवराज जी आर्य प्रधान आर्य समाज जालन्धर को बुलाकर अपने ह्रदय की पीड़ा सुनाते हुए कहा कि मेरे बच्चे मेरे समान ही मेरे दुश्मन तैयार हो रहे हैं। विपरीत विचारधारा से बालक हमारे संस्कारों से दूर होकर ईशा के विचारों से प्रभावित हो रहे हैं।

अतः मैं पुत्री पाठशाला की स्थापना करने के लिए अपनी कोठी दान करता हूँ और संसार के इतिहास में नींव के पत्थर बनकर वर्तमान युग में सर्वप्रथम पुत्री पाठशाला की स्थापना करके स्वर्णाक्षरों में अपना नाम अंकित किया। इससे पूर्व भारत वर्ष में कोई भी पुत्री पाठशाला नहीं थी। स्वामी जी का साहसिक कदम आर्य जाति के लिए संजीवनी बन गया जिसका परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज मन्दिरों में प्रायः आर्य कन्या विद्यालयों की स्थापना की गई जोभारत वर्ष में आन्दोलन के रूप में प्रभावित हुआ पुराने रिकार्ड के आधार पर

स्वामी जी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सच्चे मानस पुत्र थे उन्होंने अपने बाल्यकाल में महर्षि जी के दर्शन करके आशीर्वाद लिया था और अपनी शंकाओं का भी समाधान किया था, शंका समाधान हो जाने पर मुंशीराम बालक ने कहा थाकि स्वामी जी आपने समाधान तो कर दिया। लेकिन प्रभु के प्रति मुझे अभी विश्वास नहीं है तब हँसते हुए स्वामीजी ने उत्तर दिया कि ईश्वर पर विश्वास तो तब होगा जब प्रभु की कृपा होगी। इतना सुनकर ईश्वर भक्त बन गए आपने इस बात को अच्छी प्रकार से समझ लिया था कि वैदिक आर्य शिक्षण के बिना बच्चों को राष्ट्र की धरोहर नहीं बना सकते अतः विपरीत परिस्थितियों में भी अपने संकल्प को पूरा करने में जुट गए। औरों से शिकायत क्या होगी? अपनों ने ही साथ नहीं दिया डी०ए०वी० विभाग में कार्यरत सभी नेताओं ने सम्भवतः आपकी परीक्षा लेना श्रेयस्कर समझा होगा आप अपनी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और छः मास में तीस हजार रूपया संग्रहीत किया। मुंशीराम जी को अमन सिंह जैसे–महाराणा प्रताप जी को भामाशाह सेठ मिले थे वैसे ही मुंशी अमन सिंह जी ने स्वामी जी के लिए कांगड़ी ग्राम की भूमि उपलब्ध कराई जिससे स्वामी जी उत्साहित हो गए जैसा स्थान वे चाहते थे वैसा ही स्थान मिल गया। गंगा किनारे एवं हिमालय पर्वत की छाया में बैठकर वेद के विद्वान तैयार किये राष्ट्रभक्त एवं अच्छे पत्रकार समाज सुधारक आर्यसमाज को प्रदान किये। अंग्रेजी सत्ता के विरोध में सेनानी तैयार किये अंग्रेजी सरकार की कोप दृष्टि गुरूकुल पर पड़ी, अचानक छापा मारकर निरीक्षण किया तो स्वामी जी ने बताया कि कुछ मिला उत्तर में कुछ नहीं। तब

शेष पृष्ठ २ पर

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की यज्ञशाला में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर यज्ञ किया गया।

शनिवार २३ दिसम्बर, २०१७ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर संस्था कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार के सानिध्य में यज्ञ किया गया, जिसमें संस्था के कर्मचारी एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया और आत्मा कल्याण एवं समाज एवं देश के कल्याण की कामना किया गया।

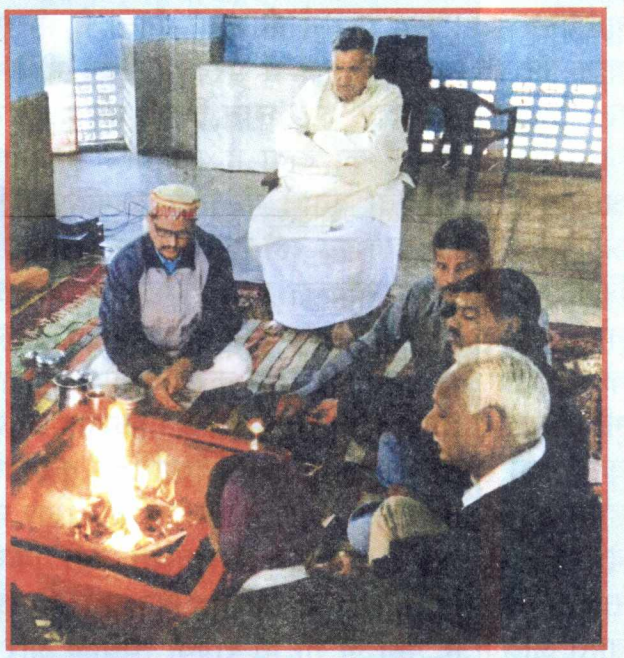

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ से संचालित/सम्बद्ध उत्तर प्रदेश की सभी आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरूकुलों एवं आश्रम के प्रधान/ मन्त्री, प्रबन्धक, प्रधानाचार्य, प्रधानाचार्या को सूचित किया जाता है कि वे अपनी आर्य समाज की (भूमि, भवन, किरायेदार की संख्या एवं आर्य समाज के आय का साधन) आदि के सम्बन्ध में विस्तृत प्रगति आख्या, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशन हेतु सभा कार्यालय में दिनांक १० जनवरी २०१७ तक उपलब्ध कराने का कष्ट करें, जिससे संस्था की वार्षिक रिपोर्ट (वार्षिक वृत्तांत) में आपकी रिपोर्ट को प्रकाशित किया जा सके। कृपया समय सीमा का ध्यान अवश्य रखें।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मो: 09837402192

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

किशोरों में संस्कारिक शिक्षा ही दिला सकती अपराध से छुटकारा

प्रद्युम्न की हत्या करने वाले आरोपी छात्र के मुकदमें को जुवेनाइल जस्टिस कोर्ट ने जिला एवं सत्र न्यायालय में स्थानांतरित करने को जो फैसला किया है, उसे भारतीय अपराध न्याय प्रणाली के इतिहास में एक दूरगामी कदम के तौर पर देखा जाना चाहिए। यानी अपराध की गंभीरता को देखते हुए प्रद्युम्न की हत्या करने वाले नाबालिग आरोपी पर किसी बालिग की तरह मुकदमा चलाया जाएगा। हमारे यहां गम्भीर अपराधों में किशोरों की बढ़ती संलिप्तता को देखते यह तर्क दिया जाता रहा है कि उनके खिलाफ भी बालिगों की तरह मुकदमा चलाया जाना चाहिए। निर्भया के साथ हुए सामूहिक बलात्कार में भी सर्वाधिक बर्बरता एक नाबालिग ने की थी। तब यौन हिंसा के खिलाफ कानून के साथ जुवेनाइल जस्टिस कानून को भी सख्त बनाया गया, जिसमें प्रावधान है कि जुवेनाइल जस्टिस कोट चाहे, तो नाबालिग के खिलाफ बालिग की तरह मुकदमा चलाने की अनुमति दे सकता है। प्रद्युम्न हत्या की जांच कर रही सीबीआई ने आरोपी छात्र की सोशल प्रोफाइलिंग करने और अपराध की गंभीरता को देखते हुए जुवेनाइल जस्टिस कोर्ट में याचिका दाखिल कर मांग की थी कि नाबालिग आरोपी पर बालिग की तरह मुकदमा चले। खुद प्रद्युम्न के माता–पिता ने भी ऐसी ही मांग की थी। अगर स्कूल में पैरंट्स टीचर मीटिंग और परीक्षा टालने के लिए कोई छात्र किसी की हत्या कर दे, जैसा कि सीबीआई का दावा है, तो यही इस मामले में अपराध की गंभीरता बताने के लिए काफी है। किशोर अपराधियों की संख्या बढ़ रही है, यह सिर्फ नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो का आंकड़ा ही नहीं बताता, बल्कि ग्रेटर नोएडा में एक किशोर द्वारा डांट फटकार का बदला लेने के लिए मां और बहन की हत्या कर देना ऐसे अपराधों की भीषणता का ताजातरीन उदाहरण है। किशोर अपराधियों का बढ़ना समूचे समाज के लिए आत्मचिंतन का विषय तो होना चाहिए, पर गंभीर अपराधों को उम्र के आधार पर छूट देने का भी लंबे समय तक समर्थन नहीं किया जा सकता। जिस अमेरिका में किशोर अपराधों का आंकड़ा बहुत अधिक है, वहां के भी दो राज्यों न्यूयार्क और उत्तर कैरोलिना में सोलह से अट्ठारह साल के किशोर अपराधियों का मुकदमा बालिगों की तरह चलता है। सख्त सजा से अपराध घटते हों या नहीं, पर यह मामला बदलती परिस्थितियों में न्याय व्यवस्था के सख्त होने का उदाहरण तो है ही।

किशोरो में पैदा हो रही अपराधिक धारणा पर अंकुश लगाने के लिए कानूनी पहलुओं के साथ हमें समस्या के मूल और उसके निदान पर ध्यान देने की बेहद जरूरत है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताये सिद्धान्तों और संस्कारों पर अमल किए जाने पर ही इस समस्या का निदान सम्भव प्रतीत होता है। आज हम आधुनिकता की इस दौर में अपने बच्चों के पालन–पोषण में उन्हें संस्कार देना भूल जाते हैं। यही कारण हैं कि हमारे बच्चे संस्कार विहीन होने से गलत रास्ते पर जाकर अपराध और अपराधियों के गिरफ्त में आकर शिकार हो रहे हैं। चिन्तन के साथ हम सबकी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम अपने भारतीय संस्कृति की ओर लौटे, बच्चों को ऐसे संस्कारित शिक्षा के मन्दिरों में भेजें जहां उन्हें गुणवत्तायुक्त शिक्षा के साथ संस्कार प्रदान करने वाली भी हो। हमारे देश और प्रदेश में आर्य समाज द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थायें इसके लिए बेहतर माध्यम हो सकते हैं।

– सम्पादक

पृष्ठ १ का शेष

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में- स्वामी ....

स्वामी जी यज्ञशाला में ब्रह्मचारियों को दिखाकर कहा कि ये जो ब्रह्मचारी बैठे हैं ये ही मेरे असली बम्ब हैं ये जब स्नातक होकर निकलेगे तब समाज से अविद्या, अन्याय का विनाश करेंगे। स्वामी जी ने भावी पीढ़ी को संस्कार देने की योजना बनाई पर हम उसे भी स्वीकार नहीं कर पाये और हम सभी आधुनिकता की दौड़ में आकर ऋषि परम्पा का निर्वाह नहीं कर पाये अतः आर्य समाज संस्था अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु पुरूषार्थ नहीं कर पा रही है। स्वामी जी ने दलितोद्धार की योजना बनाई और शुद्धि सुदर्शन चक्र चलाकर अपने पुराने बिछुड़े हुए भाइयों को गले से लगाया और शुद्ध करके पुनः आर्य होने का गौरव प्राप्त कराया गया। मुस्लिम लोगों ने जब स्वामी जी से कहा कि यदि रोटी–बेटी का सम्बन्ध बनता है तो हमें कोई आपत्ति नहीं है तब हिन्दू परिवार की बेटी देने के लिए आर्य परिवार तैयार करना कितना कठिन था आज के सन्दर्भ में चिन्तन करें कि हम अभी तक आर्य परिवार होते हुए आर्य विचारधारा के परिवार से वर्तमान जाति को समाप्त नहीं कर पा रहे हैं, लेकिन स्वामी जी ने उस समय अपनी ओजस्विता योग्यता से बेटी का सम्बन्ध बनाया और शुद्धि के कार्य में प्रगति करते हुए शुद्धि प्राप्त लोगों में आत्मीयता प्रदान की ऐसी कई घटनायें आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में चर्चित होती रहती हैं।

कुएँ पर पानी भरना अपराध माना जाता था छूआछूत का वातावरण सर्वत्र व्याप्त था स्वामी जी दलित बस्तियों में जाकर उन्हें उपदेश देकर अपना बनाने और उन्हें ऊँचा उठाने का उत्साह पैदा करते थे। सामाजिक क्षेत्र में बढ़ते हुए स्वामी जी ने राजनैतिक स्वरूप प्राप्त किया और राजनीति के तत्कालीन नेताओं में हिन्दी भाषा के प्रति–देश की अस्मिता के प्रति स्वदेशी और नारी सम्मान के प्रति जनजागरण पैदा किया। अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में अपना भाषण हिन्दी में पढ़ा–असहयोग आन्दोलन को तीव्रता प्रदान की। मोहनदास करमचन्द गांधी को सम्मानित करके उन्हें महात्मा के नाम से सुशोभित किया। स्वामी जी का अपना प्रभाव इतना बढ़ा कि दिल्ली के घण्टाघर पर जुलूस (शोभायात्रा) का नेतृत्व किया वहां अंग्रेजों ने आपको डराना चाहा तो अपके ये शब्द आज भी अमर वाक्य बन गए जिसे बोलकर लोग उत्साह प्राप्त करते हैं कि–

"हिम्मत हो तो चलाओं गोली–सन्यासी का सीना खुला है" इस प्रकार अमर सेनानी २३ दिसम्बर १९२६ की सायंकाल अपनी वीरता, उदारता का परिचय देते हुए वीरगति को प्राप्त कर ३ गोलियां खाते हुए बलिदेवी पर अमर होकर अपना नाम सदा–सदा के लिए प्रेरणा करने वालों में लिखा गये।

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने सीने में खाई गोलियाँ– "यह वाक्य भी बच्चे गली–गली में सुनाते हुए उत्साह प्राप्त करते हैं। देश, धर्म, जाति के लिए बलिदान होने का साक्षात् प्रमाण हैं स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज। वर्तमान सन्दर्भ में आने वाली प्रत्येक समस्या का समाधान हैं स्वामी जी। अतः उनके इस बलिदान दिवस पर हम संकल्प लें कि स्वामी जी द्वारा चलाये गये अभियान को पूरा करने के लिए सदैव तैयार रहेगें और आर्यसमाज की पुरानी अस्मिता और परम्परा को जीवित करके उसे आगे बढ़ायेंगे अपनी भावी पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से युक्त करेंगे तभी आर्य समाज पुराने गौरव को प्राप्त करेगा प्रभू हमें सद्बुद्धि धैर्य एवं समार्थ्य प्रदान करें।

शोक संवेदना

1. आर्य समाज ढ़ाना–सिम्भावली, हापुड के उप प्रधान श्री मा० सुरेन्द्र सिंह आर्य का देहावसान हो गया उनका शान्तियज्ञ स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुल पूठ ने सम्पन्न कराया। यज्ञ में आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने भाग लेकर आहुतियां प्रदान की सभा मन्त्री स्वामी जी ने भी परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की है। आर्य समाज के मन्त्री सुरभि आर्या के अलावा ओमदत्त आर्य तथा इण्टर कालेज के अध्यापकों ने भाग लिया।

2. आर्य समाज भगवानपुर कलां– सिम्भावली, हापुड़ के प्रधान जितेन्द्र सिंह (बबलू) के ताऊ तथा ओंकार सिंह आर्य का देहान्त हो गया उनका शान्ति यज्ञ स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुल पूठ ने किया वेदपाठ ब्र० शिवम् ने किया सभामन्त्री स्वामी जी ने परिवार में पहुंचकर शोकसंवेदना व्यक्त की। ग्राम एवं क्षेत्र के लोगों ने भारी संख्या में पहुंचकर आहुतियां प्रदान कीं।

3. नरेन्द्र शास्त्री आर्य समाज श्यामपुर, हापुड़ का शान्ति यज्ञ उनके परिवार में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभामंत्री के ब्रह्महत्व में स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुलपूठ ने सम्पन्न कराया वेदपाठ आचार्य दिनेश एवं गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने किया उसके बाद स्वामी जी का उपदेश हुआ। उन्होंने बताया कि शास्त्री जी हमारे बाल्यकाल के साथी रहे हैं गुरूकुल में साथ पढ़े गुरूकुल ततार पुर के बाद गु० सिरसागंज पढ़े और फिर कन्या गुरूकुल नरेला की स्नाति का कृष्ण शास्त्री के साथ गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया आपके पिता जी म० नरपति सिंह आर्य स्वतन्त्रता सेनानी रहे आपकी बहिन कन्या गुरूकुल सासनी में पढ़ी अपने पुत्र को भी गुरूकुल पूठ में पढ़ाया है। आप गुरूकुल ततारपुर की कार्यकारिणी एवं जिला सथा हापुड़, गाजियाबाद की भी कार्यकारिणी में रहे। आर्यसमाज श्यामपुर के भी आप उपप्रधान पद पर कई वर्षों तक रहे आपके पुराने साथी जयदेव शास्त्री, डॉ० विश्वपाल आर्य प्रि० सिम्भावली, व्रतपाल सिंह प्राचार्य इण्टर कालेज सिम्भावली, के अलावा वैदिक विद्वान् डॉ० वेदपाल जी मेरठ, डॉ० रवीन्द्र शास्त्री, डा० प्रेमपाल शास्त्री, प्राचार्य गु० ततारपुर, डा० विकास आर्य हापुड़, ज्ञानेन्द्र चौधरी कोषाध्यक्ष, के अलावा ऋषिपाल सिंह आर्य, ओमदत्त आर्य, रणजीत सिंह एडवोकेट, वीरेन्द्र सिंह आर्य, आदि उपस्थित रहे उनके सुपुत्र सत्येन्द्र शास्त्री एवं देवेन्द्र सिंह आर्य, मुन्नू आर्य यजमान रहे। यज्ञ के बाद परिवार के लिए धैर्य एवं शक्ति की प्रर्थाना की गई। क्षेत्र से आये सभी आर्य एवं सामाजिक लोगों ने शोक संवेदना व्यक्त की। गु० पूठ–ततारपुर, आर्यसमाज एवं जिला हापुड़ के साथ–साथ आर्यमित्र परिवार तथा सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी ने भी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की है। **–निरंजन सिंह शास्त्री, अधिष्ठाता/ वेदप्रचार, हापुड़**

4. गुरूकुल पूठ में भी शोक सभा करके नरेन्द्र शास्त्री जी के प्रति प्राचार्य राजीव कुमार जी ने शोक संवेदना व्यक्त की है। **–प्रदीप शास्त्री, गु० पूठ**

धरोहर

आर्य समाज के ओजस्वी प्रखर वक्ता–

पं. प्रकाशवीर शास्त्री सांसद

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

आयेंगे खत अरब से जिसमें लिखा यह होगा। गुरूकुल के ब्रह्मचारी हलचल मचा रहे हैं।

बचपन में आर्य समा के उपदेशकों द्वारा यह वाक्य बोलते हुए सुनता तो मन में विचार आता कि यह हलचल कैसी मचा रहा है, गुरूकुल के ब्रह्मचारी को विशेष व्यायाम प्रदर्शन करना पड़ता है विशेष उत्साह आता है जिधर निकल जाये लोग उसके दर्शनों के लिए लालायित हो जाये तो समझो कोई ब्रह्मचारी आया है। पं० प्रकाशवीर शास्त्री जी का नाम भी ऐसे ही दर्शनीय लोगों में रहा है जिनके दर्शन करने एवं उनका भाषण सुनने के लिए लोगों की भीड़ स्वतः हजारों की संख्या में जुट जाती थी। सर्वप्रथम उनके दर्शनों का सौभाग्य मुझे ३ नवम्बर १९६६ को मिला जब गुरूकुल ततारपुर के छात्रवास कक्षों का उद्घाटन था। मेरा कार्य पानी पिलाने के लिए था मुख्य द्वार के पास जो भी अतिथि आते उन्हें नमस्ते करने और जल पीने की प्रार्थना भी करते तभी शास्त्री जी आये उन्हें भी अभिवादन करके पानी पिलाया। उन्होंने नाम पूछा और बोले ब्रह्मचारी जी क्या पढ़ते हों? मैंने कहा संस्किरत। इतना सुनकर मुस्कराते हुए मंच की ओर चले गये। मैंने सोचा कोई गलती हो गयी है उनके मुस्कराने का तरीका यही था और जब अपना भाषण प्रारम्भ किया तो *वही से कि अभी–अभी मैं* गुरूकुल के मुख्य द्वार पर एक ब्रह्मचारी से पूछ रहा था कि क्या पढ़ते हो उसने संस्कृत न कहकर संस्कारित कहा मुझे अच्छा लगा उसके उच्चारण की बात नहीं है, उसकी भावना उत्साह और बाल स्वभाव से मुझे लगा कि ये ब्रह्मचारी आगे चलकर आर्य सामज के कार्यकर्ता बनेंगे, अधिकारी बनेंगे महर्षि दयानन्द के विचारों को देश–विदेश में पहुंचायेंगे और उस समय अपना भाषण देते हुए कहा था– आयेंगे खत अरब से...। यह उनके भाषण देने का प्रभावशाली स्वरूप था। हापुड़ आर्य समाज के वार्षिक सम्मेलन में आये। भाषण प्रारम्भ करते हुए कहा कि अभी मैं गढ़मुक्तेश्वर से आ रहा हूं, रास्ते में एक वृद्धा मां ने मुझे रोककर आशीर्वाद देते हुए कहा कि बेटा जब तुम दिल्ली एम.पी. बनकर जाओ तो अन्न मंहगा हो गया है इसे सस्ता करवा देना। आज जनमानस त्रस्त है, भूखा है, अभावों में जी रहा है और हमारी सरकार इस पर ध्यान नहीं दे रही हैं। मैंने माता जी को आश्वासन दिया है कि आपकी बात जाकर उनका मोहन मंत्र जो सीधा हृदय पर प्रभावशाली होता था। उन दिनों चुनाव का दौर चल रहा था। अतः स्थान स्थान पर भाषण देने जाते थे। मा. बेगराज जी सहित अनेकों उपदेशक कार्यक्रमानुसार आगे जाकर भूमिका तैयार करते थे और आप भाषण द्वारा जनता को सम्बोधित करते थे। इस प्रकार थोड़े ही खर्च में बिना किसी पार्टी के निर्दलीय रूप में सांसद बनकर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया करते थे और संसद भवन में अपनी बात का प्रस्तुतिकरण सुन्दर ढंग से करते थे। वाणी का जादूगर आपको कहा जाता था। एक बार समाजवादी नेता श्री राम मनोहर लोहिया ने आपके विषय में किसी बात पर कह दिया था कि ये अकेला चना क्या भाड़ फोड़ देगा? तभी आपने उसका उत्तर देते हुए कहा था कि यह तो जरूर है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता लेकिन यदि वह तिरछा होकर छिटक जायें तो भड़भूजे की आंख जरूर फोड़ देगा।

इस वाक्य ने ही आपको इतनी प्रसिद्धि दिलाई कि दूसरे सांसद चाहे पक्ष के हो या विपक्षी सभी चुपचाप आपका भाषण सुनते थे किसी की हिम्मत कटाक्ष करने की नहीं होती थी। आज के परिवेश में यदि होते तो तुलनात्मक दृष्टि से वे सर्वोपरि सांसद के रूप में प्रतिष्ठित होते। सुना है जिस दिन आप संसद में भाषण देते थे उस दिन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी भी बैठकर आपका भाषण सुनते थे। आपकी वक्तृव्य कला परिमार्जित भाषा एवं नपे तुले शब्दों में होती थी, आंकड़े होते थे। आपके भाषण और वक्तव्यों का प्रकाशन हो चुका है उनमें आप पढ़कर पूर्णरूपेण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आपने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं जो चर्चित है– गो हत्या या राष्ट्र हत्या, कश्मीर समस्या एवं समाधान, मेरे सपनों का भारत, आदि आदि है। आपका सुन्दर मुख मण्डल सौन्दर्य युक्त मुस्कान, आकर्षक नेत्र, आकर्षक व्यक्तित्व, लम्बा शरीर, धोती कुर्ता एवं कंधे पर पट्टी नुमा तौलिया अथवा लोई डालकर चलने का अभ्यास प्रायः बना हुआ था। मा. बेगराज जी आर्य भजनोपदेशक आपके साथ रहने के संस्मरण सुनाया करते थे। एक दिन की घटना सुनाते हुए बताया कि चुनाव के समय गढ़ क्षेत्र में एक ग्राम पलवड़ा सम्पर्क हेतु आये थे ग्राम से निकलते हुए उत्तर दिशा में वाल्मिकी लोगों की अधिकता है उनके द्वारा पोषित शूकर (सुअर) का एक बच्चा फिएट गाड़ी के नीचे आ गया और मर गया। बच्चे की चित्कार से आस पास के सभी मोहल्लेवासी वाल्मिकी लट्ठ लेकर आ गये और गाड़ी को घेर लिया। मा. बेगराज जी घबरा गये बोले शास्त्री जी आज तो मामला भयानक है यहां से सुरक्षित नहीं जा सकेंगे। पुलिस व्यवस्था भी साथ नहीं थी। एक बार उन लोगों को देखकर सभी सहम गये। हमारी हिम्मत बाहर निकलने की नहीं थी तभी प्रभु ने उन्हें शक्ति दी और वे बाहर निकले, उनके क्रोधित एवं रौद्र रूप के सामने मुस्कान युक्त मुख मण्डल से बोले–मैं प्रकाशवीर शास्त्री आपके क्षेत्र से चुनाव लड़ रहा हूं शेर मेरा चुनाव चिन्ह है और आपके आशीर्वाद की मुझे आवश्यकता है। मुझे बड़ा दुख है कि ड्राइवर की भूल से यह बच्चा मर गया और फिर आपको तो मारना ही था मारकर खाने की आपकी परम्परा जो है चलो मारना नहीं पड़ा शायद प्रभु की यही इच्छा हो और जेब से पांच रूपये का नोट निकालकर देते हुए कहा लो मिर्च मसाला जो आता है मंगा लेना ठीक है? ऐसा कहकर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते की और गाड़ी में बैठकर बोले चलो भाई, गाड़ी चलाओ। किसी व्यक्ति के मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। थोड़ी दूर चलकर मैंने ही अपना मौन तोड़ते हुए कहा शास्त्री जी आप पर तो प्रभु की कृपा तो है ही साथ में महर्षि दयानन्द जी की भी तो कृपा है अतः दोगुनी कृपा का ही परिणाम हैं और फिर गुरूओं का भी आशीर्वाद है जो आप जैसे सहयोगी मिल रहे हैं। इस घटना को आज के संदर्भ में सोचा जाये तो कितना परिवर्तन आ चुका है चुनाव प्रचार का खर्च, अपना व्यक्तिगत खर्च, दिखावा और भीड़ के साथ चलकर प्रभावित करने का तरीका, सभी कुछ तो बदल गया है। तत्कालीन पांच रूपये का मूल्य भी पर्याप्त था लेकिन मुआवजा जैसी वस्तु के लिए लोग जाम लगाते हैं धरने और प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार के वाह्य आडम्बरों से भी शास्त्री जी सदैव पृथक रहे और अपनी पहचान " अकेला चलो रे" के रूप में बनाई।

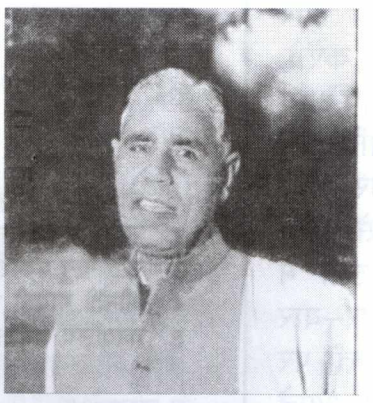

गुरूकुल ततारपुर के वार्षिक सम्मेलन और स्थापना दिवस पर प्रायः प्रतिवर्ष आते ही रहते थे और आप–पास के ग्रामों के लोग उनका भाषण सुनने के लिए अवश्मेव आते थे। आपके बोलने की शैली सुमधुर थी। एक बार आहार निद्रामय मैथुनच्च...) इस श्लोक पर लगभग १ घंटा भाषण देकर बताया कि जिस समय पर श्लोक लिखा गया उस समय यह समानता रही होगी लेकिन यदि आज वे आकर दुनियां और समाज को देखें तो उन्हें यह श्लोक बदलना पड़ेगा जिसके फलस्वरूप मनुष्य इन चारों में पशु से भी नीचा हो गया है।

धर्म की चर्चा करना अब मनुष्यों के लिए नहीं केवल देवताओं के लिए सुरक्षित हो गया है और वह भी समाज में कई प्रकार से विभाजित होकर धर्म के नाम पर जनता को दिग्भ्रमित कर रहा है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग के अतिरिक्त दुनिया में कहीं भी सुख और आनन्द नहीं है। लोगों ने पूरा भाषण पूरी तन्मयता से सुना और शान्त मन से घरों को जाते हुए उनकी प्रशंसा कर रहे थे। पूरा आर्य जगत आपकी सुमधुर भाषण शैली से प्रभावित हो रहा था। गढ़मुक्तेश्वर के गंगा मेले पर शास्त्री जी प्रतिवर्ष आकर आर्य समाज कैम्प सेंटर–१ में अपना सम्बोधन करते थे। हम भी प्रायः गुरूकुल की ओर कभी यज्ञ हेतु कभी सेवा कार्य हेतु जाते थे। एक बार आपने जो भाषण दिया था वह आज भी

शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष

पं. प्रकाशवीर ...

प्रासंगिक है– रात्रि कालीन सभा में भारी भीड़ थी, आप भारत वर्ष की प्रशंसा और गरिमा का वर्णन करते हुए फिर अचानक वाणी में उग्रता आई और बोले कि माना यदि देश के मुसलमानों से कहा जाये कि आप भारत देश से बाहर चले जाओ और दुनिया के मुस्लिम देशों में जाकर बस जायेंगे और ईसाईयों से कहा जाये तो भी दुनिया में ईसाई देश है वहां जाकर शरण ले लेंगे फिर यदि हिन्दुओं से कहा जाये कि आप भारत छोड़कर कही भी अन्यत्र चले जाओं तो मुझे बताओ दुनिया के किस देश में जाकर शरण प्राप्त करेंगे? पूरी दुनिया में मात्र नेपाल ही हिन्दू राष्ट्र है। उसकी भी क्षमता उतनी नहीं है। थोड़ी देर शान्त रहकर फिर पूछा बताओ गंगा स्नान करने वाले हिन्दू लोगों तुम्हारे पास कोई समाधान हैं? फिर अचानक बोले हां मुझे २ जगह तो दिखाई देती है– भारत के पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर। इसके अलावा दुनिया में हिन्दुओं के लिए कोई जगह नहीं है। वर्ष १९६९–७० के लगभग की बात है उन्होंने महात्मा गांधी की अहिंसा की व्याख्या की और बोले आज महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त को अपनाने की आवश्यकता है अतः जब यहां से जाओ आठ आने की एक लाठी जरूर ले जाना और उस पर तेल लगाते रहना, उसको चलाने का अभ्यास करते रहना इससे आपका अभ्यास आपको सदैव स्वस्थ और सुरक्षित रखेगा और जब इसकी आवश्यकता पड़ेगी मुझे याद कर लेना इतना कहने पर जोरदार तालियों से उनका स्वागत किया था। यह थी दूरदर्शी बुद्धि। आज ४०–४५ वर्षों बाद भी उनका वाक्य प्रासंगिक लग रहा है। पूरे देश की स्थिति का अवलोकन करें आपको महर्षि दयानन्द सरस्वती के बिना किसी भी समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। गुरूकुलीय शिक्षा एवं संस्कारों से पोषित होकर जब शास्त्री जी स्नातक हुए तब दीक्षान्त समय में संकल्प लिया था कि अपनी भारतीय सभ्यता और संस्कृति सभ्यता और संस्कृत भाषा का प्रचार–प्रसार करेंगे, इसी के लिए समर्पित रहें। संसद सदस्य रहते हुए आप आर्य समाज का प्रचार प्रसार पूर्ववत् किया। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का अध्यक्ष पद स्वीकार किया और आर्य महासम्मेलनों की परम्परा स्थापित की। शताब्दी से पहले मेरठ– कानपुर–वाराणसी में सम्मेलन करके दिल्ली में शताब्दी का आयोजन किया। उनकी स्मृतियां बार–बार आकर प्रेरणा प्रदान करती हैं। हम भी उनकी जयन्ती पर संकल्प लें कि उनके अधूरे कार्यों को पूरा करते हुए अपने समय का सदुपयोग करेंगे। प्रभो, हमें शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें।

511
22/12/17

कार्यालय डिप्टी रजिस्ट्रार, फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स लखनऊ मण्डल, लखनऊ।

संख्या /I-72 लखनऊः दिनांक 2017

आदेश

संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ के सम्बन्ध में श्री भानु प्रकाश आर्य, प्रतिष्ठित सदस्य एवं श्रीमती गायत्री दीक्षित वरिष्ठ उपप्रधान व अन्य के संयुक्त हस्ताक्षरित शिकायती पत्र दिनांक–06.11.2017 के क्रम में कार्यालय के पत्र संख्या–4477 दिनांक–09.11.2017 के द्वारा डा0 धीरज सिंह कार्यवाहक प्रधान को पत्र प्रेषित करते हुए निर्देशित किया गया था कि जब तक संस्था की अंतरंग सभा की बैठक दिनांक–23.07.2017 की वैधानिकता एवं प्रभाव एवं निर्णय सो0र0जि0अधि0 1860 की धारा–24 के अन्तर्गत निरीक्षण एवं परीक्षण के आधार पर नहीं हो जाता है। आप संस्था की कोई भी अंतरंग सभा की बैठक संस्था की पंजीकृत नियमावली की धारा–12 के प्राविधान के अनुसार संस्था की पंजीकृत सूची के अनुसार संस्था के पंजीकृत कार्यालय नारायण स्वामी भवन, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में ही आहूत करेंगे।

कार्यालय के पत्र दिनांक–09.11.2017 के क्रम में संस्था के मंत्री श्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती द्वारा अपना प्रत्यावेदन दिनांक–11.11.2017, (जो कार्यालय में दिनांक–14.11.2017 को प्राप्त है) प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने उल्लेख किया है कि "संस्था की नियमावली के नियम–12 में प्राविधानित है कि सभा के अधिवेशन साधारणतया सभा के कार्यालय नारायण स्वामी भवन, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में हुआ करेंगे। परन्तु अन्तरंग सभा को अधिकार होगा कि आवश्यकतानुसार अधिवेशन को अन्यत्र करना निश्चय करें।"

अपने उक्त प्रत्यावेदन में श्री श्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती द्वारा कार्यालय पत्र संख्या–4477 दिनांक–09.11.2017 को निरस्त/वापस लिये जाने का अनुरोध किया गया है। तत्पश्चात दिनांक–24.11.2017 को संस्था के कार्यवाहक अध्यक्ष डा0 धीरज सिंह द्वारा अपने पत्र के साथ रिट याचिका सं0–27779(एम0एस0)/2017 में पारित मा0 उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक–17.11.2017 की स्वप्रमाणित प्रति भी कार्यालय में प्रस्तुत की गयी है, जिसमें मा0 उच्च न्यायालय खण्डपीठ लखनऊ के द्वारा कार्यालय के पत्र दिनांक–09.11.2017 को अग्रिम आदेशों तक स्थगित किये जाने के आदेश पारित किया गया है।

अतः मा0 उच्च न्यायालय के उपरोक्त स्थगन आदेश दिनांक–17.11.2017 के अनुपालन में कार्यालय के पत्र संख्या–4477 दिनांक–09.11.2017 को वापस लिया जाता है।

(सन्तोष कुमार मौर्य)
डिप्टी रजिस्ट्रार

संख्या 5156 (20 /I-72/ लखनऊः दिनांक 18.12 2017

प्रतिलिपिः– निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः–

1. डा0 धीरज सिंह, कार्यवाहक प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
2. स्वामी धर्मेश्वरानन्द, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
3. डॉ0 भानु प्रकाश आर्य, प्रतिष्ठित सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
4. श्रीमती गायत्री दीक्षित, वरिष्ठ उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 पता–छोटी सब्जी मण्डी, शाहजहाँपुर।
5. कार्यालय अधीक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

डिप्टी रजिस्ट्रार

जीवन यात्रा के यशस्वी चरण

१९२३ : ३० दिसम्बर को जन्म, ग्राम रेहड़ा।
१९३३ : वैशाखी पर्व पर गुरुकुल ज्वालापुर में प्रवेश, दीक्षारम्भ।
१९३९ : छात्रावास में हैदराबाद में सत्याग्रह, कारावास।
१९४६ : १६ नवम्बर को सिन्ध में सत्याग्रह।
१९५२ : 'मेरे सपनों का भारत' पुस्तक प्रकाशित।
१९५४ : 'राष्ट्र हत्या या गो हत्या' पुस्तक प्रकाशित।
१९५७ : पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में प्रचार प्रभारी।
१९५८ : गुड़गांव से सांसद निर्वाचित : राजनीति में प्रवेश।
१९६० : लोकसभा में धार्मिक स्थानों–मथुरा, काशी, अयोध्या के पुन संस्थापन का विधेयक प्रस्तुत।
१९६१ : १७ मार्च को देवनागरी को सभी भारतीय भाषाओं की लिपि बनाने का विधेयक। ७ सितम्बर को दक्षिण भारत में हिन्दी विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव।
१९६१ : उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित। बाद में ६२, ६८ और ७० से ७४ तक भी प्रधान रहे।
१९६२ : हापुड़ क्षेत्र से लोकसभा के लिए निर्वाचित।
१९६४ : २४ अप्रैल को धारा ३७० समाप्त करने का विधेयक प्रस्तुत।
१९६६ : २५ जून गोरक्षा आंदोलन समिति के सदस्य।
१९६६ : १८ नवम्बर को सम्पूर्ण गोवंश के वध पर प्रतिबन्ध का विधेयक प्रस्तुत।
१९६७ : १ दिसम्बर को बलात् धर्म परिवर्तन के निषेध का विधेयक प्रस्तुत।
१९६७ : बिजनौर से लोकसभा के लिए सदस्य निर्वाचित।
१९६९ : भारतीय क्रान्तिदल के महामन्त्री बने।
१९७३ : वेदों के अंग्रेजी अनुवाद के लिए वेद प्रतिष्ठान की स्थापना।
१९७४ : जनसंघ के टिकट पर राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित।
१९७४ : मथुरा में विरजानन्द अनुसंधान भवन का उद्घाटन, उपराष्ट्रपति श्री जत्ती द्वारा।
१९७५ : प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी को टंकारा ले गए।
१९७५-७६ : मेरठ, कानपुर, वाराणसी, नैनीताल में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोहों का आयोजन।
१९७७ : २३ नवम्बर को रेल दुर्घटना में निधन।

विशिष्ट कार्य

१. उत्तर प्रदेश प्रतिनिधि सभा के तिमंजिले भवन का निर्माण।
२. हिन्दी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी की सेवा के लिए राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित।

945

प्रशस्ति–संस्मरण

★ स्वर्गीय श्री प्रकाशवीर शास्त्री भारतीय संस्कृति के उत्थान तथा हिन्दी एवं संस्कृत के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध थे। वे राष्ट्रीय गौरव को क्षितिज की ऊँचाइयों तक ले जाने और राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। उनमें देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने अपने लम्बे धार्मिक, राजनैतिक तथा सार्वजनिक जीवन में अपनी प्रखर राष्ट्रीय विचारधारा के कारण एक अलग पहचान बना ली थी। *—अटल बिहारी वाजपेयी*

★ भारतीय संस्कृति में गहरी आस्था रखने वाले, वैदिक एवं राष्ट्रीय विचारों के पोषक तथा धार्मिक, सामाजिक, संसदीय एवं सार्वजनिक जीवन में अपनी सांस्कृतिक चेतना एवं प्रखर राष्ट्रीयता के कारण अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी के प्रति मेरी श्रद्धांजलि। *—लालकृष्ण आडवाणी*

★ शास्त्री जी ने संसद तथा संसद के बाहर हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार के लिए सराहनीय कार्य किये। संसद में उनके धारावाहिक हिन्दी भाषण को विरोधी भी बड़ी तन्मयता से सुनते थे। *—पी. वी. नरसिंह राव*

★ श्री प्रकाशवीर बहुमुखी प्रतिभा और प्रखर व्यक्तित्व के धनी थे। उनके समसामयिक उनकी विद्वता, वक्तृता एवं समाजवादी व्यवस्था के प्रति निष्ठा का लोहा मानते थे। भारत की गौरवशाली संस्कृति, इतिहास तथा वैदिक मूल्यों और परम्पराओं में उनकी आस्था ने भी उनकी विचारधारा को प्रभावित किया था तथा उनके दृष्टिकोण को संवारा था। *—कृष्णकान्त*

★ स्व. शास्त्री जी ने अपने सार्वजनिक जीवन में अपनी प्रखर राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक चेतना द्वारा एक अलग पहचान बनाई थी। वे सदा भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते रहते थे। निजाम रियासत के भारत में विलय के आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले स्व. श्री प्रकाशवीर जी महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी थे। स्व. श्री प्रकाशवीर जी की आत्मा को नमन और उनकी पुण्य स्मृति को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। *—जॉर्ज फर्नांडीस*

★ शास्त्री जी मेरे मित्र थे। वर्षों तक हम लोकसभा में साथ-साथ रहे। संसद में उनकी गिनती ओजस्वी और प्रभावशाली वक्ताओं की प्रथम श्रेणी में थे। *—कृष्णचन्द्र पंत*

★ प्रकाशवीर जी ने अपनी जीवन यात्रा में अपने नाम को सार्थक करते हुए सत्य के "प्रकाश" से राष्ट्रीय जीवन को आलोकित किया; उनके साहस, शौर्य और पराक्रम ने उनको "प्रकाशवीर" बनाया। उनके अगाध पांडित्य, अनवरत स्वाध्याय तथा उनकी सुतीक्ष्ण मेधावी प्रतिभा ने उनको उपाधि से परे और बहुत ऊँचाई पर भारतीय जनजीवन, संस्कृति और विद्या का प्रामाणिक व्याख्याता, "शास्त्री" और वाचस्पति बनाया। ... स्व. प्रकाशवीर शास्त्री मेरे अभिन्न मित्र थे इस अभिन्नता का आविर्भाव और सघन संवर्धन अनायास होता गया। मेरे प्रति उन्होंने मित्रता की अभिन्नता को जिया और परिभाषित किया। *—लक्ष्मीमल्ल सिंघवी*

–प्रेरक प्रसंग

सौजन्य की महिमा

एक बार की बात है कि काशीराज और कोसलराज अपने रथों पर बैठ कर विपरीत दिशाओं से आ रहे थे कि सहसा मार्ग में दोनों के रथ आमने सामने आ गये। मार्ग संकरा था। जब तक कि कोई एक रथ मार्ग से इधर–उधर न हो तब तक कोई भी रथ आगे बढ़ नहीं सकता था। काशिराज के सारथि ने दूसरे रथवाले से कहा– "देखो, मेरे रथ पर महाराज काशीनरेश हैं, तुम हमें रास्ता दो तो हम आगे निकल जायें।"

दूसरा सारथी बोला–"नहीं, नहीं। तुम मुझे रास्ता दो। तुम्हें ही मार्ग छोड़ना होगा, क्योंकि मेरे रथ पर कोसल के महाराज विराजमान हैं।"

दोनों असमंजस में। अन्त में एक ने कहा–"जो राजा आयु में छोटा हो वह रास्ता छोड़ दे।" यह बात दोनों को पसन्द आई। किन्तु फिर भी हल नहीं निकला। क्योंकि दोनों राजाओं की आयु समान ही थी।

"जिसका राज्य बढ़ा हो, उसे प्रथम निकलने का अधिकार होना चाहिए।" दोनों सारथियों ने इस बात पर समझौता किया। किन्तु इससे भी हल नहीं निकला। क्योंकि दोनों राजाओं का राज्य समान रूप से तीन सौ योजन ही था।

दोनों ने फिर मार्ग ढूंढा कि जो अधिक सदाचारी हो, उसे प्रथम निकलने का अधिकार होना चाहिए।

तब कोसल नरेश के सारथी ने बतलाया–" हमारे महाराज सज्जन के साथ सज्जनता का और शठ क साथ शठता का व्यवहार करते हैं। यह उनका महान् गुण है।"

काशीराज का सारथी बोला–" तब तो मेरा रथ ही पहले निकलेगा। क्योंकि हमारे महाराज तो सद् व्यवहार से ही दूसरों के दुर्गुणों को दूर करते हैं।" यह सुनकर कोसलराज ने स्वयं काशिराज के रथ के लिए मार्ग छोड़ने के लिए कह दिया। कोसलराज पर काशिराज की सुजनता का बड़ा प्रभाव पड़ा था।

जन्मजात सफल सेनानी–

स्वामी श्रद्धानन्द

धर्मवीर विद्यालंकार

धन्या नरा विहित कर्म परोपकाराः। वे मनुष्य धन्य हैं, जिनका जीवन दूसरों के दुःखों को दूर करने में समर्पित हैं। वे जातियां धन्य हैं, जो इस प्रकार सेवा–व्रती मनुष्यों को उत्पन्न करती है, और वे जातियां अमर हो जाती हैं जो उन परहितचिन्तक, प्रातः स्मरणीय मनीषी महा–पुरूषों को स्मरण करती रहती हैं, और उनके पद–चिन्हों पर चलते हुए विश्व के सुख–समृद्धि और शांति में वृद्धि करती हैं। भारतीय परम्परा में महापुरूषों के जन्म दिवस मनाने की प्रथा कम है। महापुरूषों द्वारा सम्पादित महत्वपूर्ण कार्यों के अनुसार उनको स्मरण करने का दिन निश्चित किया जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म १३ फाल्गुन, संवत् १९१३ तदनुसार सन् १८५६ में हुआ था। परन्तु भारतीय जनता २३, दिसम्बर को उन्हें स्मरण कर अनुप्राणित होती है। २३ दिसम्बर सन् १९२६ के दिन एक धर्मान्ध मुसलमान, अब्दुलरशीद की तीन गोलियों को झेलकर वे अमर बलिदानी हो गये। उनकी जीवन–गाथा से अपने जीवन में उत्साह, कर्मण्यता, देश धर्म और प्राणि मात्र की खोज में अपने को समर्पित करने का संकल्प ग्रहण करते हैं।

मेधावी बालक– स्वामी जी का बचपनका नाम मुंशीराम था। उनके दो बड़े भाईयों को पढ़ाने एक पण्डित जी घर आया करते थे। कभी–कभी बड़ी विचित्र बात होती। वे दोनों बालक जब पण्डित जी को पढ़ा पाठ न सुना पाते, तब ३/४ वर्ष का बालक मुंशीराम सुना देता। अपने भाईयों को वह पढ़ते देखता, और पण्डित जी की बात सुनता था। बात को ग्रहण करने और स्मरण करने वाली प्रखर मेधा का ही यह प्रभाव था। नवयुवक मुंशीराम आस्तिक से नास्तिक बना। फिर स्वामी दयानन्द के तर्कों से पराजित हो ऐसा आस्तिक बना कि हजारों को आस्तिक बना दिया। फिर कठिन वेदमन्त्रों का सरल मनोहारी व्याख्यान करने लगा। यह बचपन की प्रखर मेधा का ही अद्‌भुत परिणाम था।

सत्य का कर्मठ अन्वेषक– मुंशीराम के माता–पिता धार्मिक वृत्ति के थे। मुंशीराम भी 'पितुः अनुव्रतः पुत्रः' शिव के उपासक थे। किशोरावस्था में बनारस रहते हुए प्रतिदिन 'विश्वनाथ के दर्शन हेतु मन्दिर जाया करते थे। एक दिन कुछ देर हो गई। रींवां रियासत की रानी पूजा–पाठ कर रही थीं। मुंशीराम को प्रवेश न मिला। उस नवयुवक हृदय को ठेस लगी। उन्हीं दिनों ब्राह्मणों के पाखण्ड और वाम–मार्गियों के कुकृत्य को स्वयं देख ईसाई बनने चल पड़े। पादरी की अनुपस्थिति में, उसके घर एक अश्लील घटना देख लौट पड़े कि–कर्तव्य विमूढ़ हो गये तथा नास्तिक हो गये धर्म–कर्म के प्रति श्रद्धा पूर्णतः लुप्त हो गई। परन्तु समस्त हृदय की आस्तिकता स्वामी दयानन्द के अद्‌भुत दिव्य स्पर्श पाकर गंगा की निर्मल, शीतल धारा के समान स्वतन्त्र प्रवाहित होने लगी। यह घटना सन् १८७९ की है। इसके पांच वर्षों के उपरान्त मुंशीराम ने सन् १८८४ में आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। इन ५ वर्षों में वे निरन्तर संघर्ष करते रहे। सत्यार्थ–प्रकाश का अध्ययन करते रहे।

व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में परखते रहे। शराब पीना छोड़ा, फिर मांस खाना छोड़ा और आचरण को निरन्तर पवित्र और सत्यान्वेषी बनाते रहे। आर्य समाज की सदस्यता के अनुरूप चरित्रवान् होने पर ही उसकी सदस्यता ग्रहण की फिर तो वे उन्मुक्त पंछी की तरह पंख फैला उड़ने लगे। आर्य सिद्धांतों का मनन करना, मनन किये का व्याख्यान करना अपने उर्दू अखबार 'सद्धर्भ प्रचारक' में उसे प्रकाशित करना, नगर–नगर, ग्राम–ग्राम में उसका प्रचार करना, लाहौर की आर्य समाजों के वार्षिक उत्सवों में स्वयं जाना, दूसरों को ले जाना, नये–नये ज्ञान प्राप्त कर उन पर आचरण करना और कराना उनके जीवन के अंग हो गए। सांसारिक धन्धे छूट गये, वकालत बन्द कर दी, बच्चों को गुरूकुल में प्रविष्ट कर दिया। इतना कर्मठ कोई व्यक्ति नहीं हुआ जो आर्यसमाज का प्राथमिक सदस्य बनने के चार वर्ष के भीतर प्रांतीय सभा का पद पा ले। यह सत्य के ग्रहण का प्रभाव है।

वकालत करते हुए वे सदा सत्य पक्ष को ही ग्रहण करते थे। एक बार वे मुन्सिफ के सामने मुकदमा छोड़कर चले गये। प्रतिवादी के बयानों के मध्य वकील मुंशीराम ने अपने मुवक्किल से पूछा कि क्या प्रतिवादी सत्य कह रहा है? मुवक्किल ने सत्य स्वीकार कर लिया। वकील मुंशीराम ने मुन्सिफ से सत्य स्वीकार कर मुकदमा समाप्त कर दिया और मुवक्किल की प्राप्त फीस उसे लौटा दी। अदालतों में इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि अगर कोई गवाह अपने को आर्य समाजी कह दे तो उसे सत्यवादी मान लिया जाता था।

निर्भीक एवं साहसी– सत्य को मन एवं बुद्धि से जान, उस पर निर्भीकता और साहस पूर्ण आचरण करना उनका स्वभाव था। इसकी एक झलक उनकी नवयौवनावस्था में मिलती है। बनारस में विद्या अध्ययन के दिनों में एक बालिका को चार गुण्डों से अकेला ही लड़कर बचाया।

पण्डितों के पाखण्ड के कारण 'ईसाईयों के बलात्कार को देख उनकी धर्म के प्रति श्रद्धा समाप्त हो गई। इसे निर्भीकता से अपने पिता के समाने स्वीकारा। आर्य समाज में प्रविष्ट हुए फिर कन्या पाठशाला की स्थापना की तो बिरादरी से निकाले गये। इस समय अपूर्व साहस का धैर्य का और स्थिर अविचल बुद्धि का परिचय दिया।

सन् १९१९ में अंग्रेजों द्वारा लागू एक्ट के विरोध में भारी जुलूस चाँदनी चौक दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में जा रहा था। चांदनी चौक के घण्टाघर पर गोरखा फौजियों द्वारा अंग्रेजों ने जुलूस को रोका और गोली चलाने का आदेश दिया। ऐसे घोर संकट में वह स्थित–संन्यासी सामने आया। अपने कुर्ते के बटन खोले। दोनों हाथों से सीना खोलकर निर्भीकता पूर्वक बोला– पहले मेरे सीने पर गोली चलाओ, फिर जनता पर चलाना।' उनके अदभ्य साहस के सामने गोरखा सैनिक हतप्रभ और अंग्रेज दंग रह गये। रास्ता खुल गया। जुलूस पार्क में पहुंचा। शान्त और गम्भीर वातावरण में सभा सम्पन्न हुई। इस घटना के बाद भी १५ दिन तक ऐसी शान्ति, रही, मानो रामराज्य स्थापित हो गया हो।

अमृतसर में होने वाले सन् १९१९ में कांग्रेस अधिवेशन का दायित्व कोई लेने को तैयार न था इसके पहले जलियाँवाला बाग में हजारों निहत्थे भारतीयों को क्रूर अंग्रेजों ने गोलियों से भून दिया था। गम्भीर आतंक दिल–दिमाग पर घर कर चुका था। ऐसे संकट के समय स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष बने। गली–गली मुहल्ले–मुहल्ले में प्रचार किया। प्रतिनिधियों को अपने घरों में ठहराया। उनके भोजन की व्यवस्था घरों में की। सम्मेलन को अभूतपूर्व सफलता मिली।

संकट के समय कांग्रेस को उबारने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने उसी कांग्रेस को निर्भीकता और साहस से एक दिन छोड़ अपनी अलग रहा पकड़ी। कारण था कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति। नया मार्ग जो स्वामी जी ने पकड़ा वह था शुद्धि आन्दोलन और राजनीति में हिन्दू हितों की रक्षा, अर्थात् हिन्दू सहायता की स्थापना। यह उससे भी अधिक साहस और निर्भीकता की अपेक्षा करता था। मुसलमान बने मेंवों। (मेवातों) को फिर से हिन्दू बनाना परम आवश्यक था। इसी कार्य के कारण पं० लेखराम सन् १८९७ में बलिदान हो गये थे।

उन दिनों दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेज घोर अत्याचार कर रहे थे। महात्मा गांधी वहां सत्याग्रह कर रहे थे। गुरूकुल छात्रों ने मजदूरी से कमाया पर्याप्त धन बचाया मनों अन्न दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी को भेजा। इससे अंग्रेजों को नाराज करना था। जो उनके आतंक से भयभीत भारतीयों के लिए जोखिम का काम था।

गुरूकुल तो खुल गया। पर सन्तोष तब हुआ, जब चौधरी अमन सिंह जी ने जिला बिजनौर के कांगड़ी ग्राम में बहुत बड़ा–खण्ड १०० एकड़ जो गंगा के पवित्र धाराओं के मध्य, हिमालय की तलहटी में ऋषिनिर्माण के पवित्र उद्‌देश्य से मुंशीराम जिज्ञासु को दे दिया। उन्हें अपना स्वप्न साकार होता प्रतीत हुआ। वेद की निम्न ऋचा उन्हें अपनी ओर प्रबल आकर्षण से खींच रहीं थी–

उपह्वरे गिरीणां, संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत। यजु० ।१५।

हिंसक पशुओं के मध्य घने जंगल में, घास की कमजोर झोपड़ियों में, जिसमें जेठ मास की लू, पौष मास की बर्फीली ठण्डी हवा, बिना रूकावट अन्दर आती थी, मुंशीराम जी जिज्ञासु ३४ छोटे बालकों ब्रह्मचारियों के साथ पहुंचे, और हजारों की संख्या में आर्य संस्कृति का अनुयायी, एक भक्त–जन समूह जो इस अद्‌भुत, नवीन, चमत्कारपूर्ण प्रयोग देखने को अभिलाषी था। उस वर्ष हरिद्वार में प्लेग फैल गया। सरकार ने जनता को इन बीमारी से सावधान करते हुए, वहां जाने से मना कर दिया। परन्तु इस चेतावनी की पूर्ण उपेक्षा करते हुए, जंगल में मंगल करने वाली अभूतपूर्व शिक्षा–प्रणाली के भक्त कब रुकने वाले थे। सोत्साह चले आये। यह था अप्रैल सन् १९०२ ई०।

जैसे माता अपने गर्भस्य बालक का रक्षण, पालन पोषण अत्यन्त सतर्कता, निपुणता से,

शेष पृष्ठ ७ पर

पृष्ठ ६ का शेष

स्वामी श्रद्धानन्द

वात्सल्य से करती है, ऐसे ही महात्मा मुंशीराम जी जिज्ञासु इन ३४ ब्रह्मचारियों के आचार्य–माता–पिता के रूप में दिन में, रात्रि में उषः काल और सायंकालीन संध्या बेला में, उनकेचरित्र निर्माण में शरीरिक सबलता, सुडौलता, मानसिक दृढ़ता के विकास के लिए आत्म–ज्योति प्रदीप्त होने के लिए अथक प्रयत्न करने लगे। यह शिक्षा प्रणाली विश्व भर में प्रसिद्ध हुई। इस संस्था ने अनेकों देश के स्वातन्त्रय संग्राम में, धर्म संकट में आहुत हुए। सभी ने आर्य भाषा हिन्दी के साहित्य ऐश्वर्य में वृद्धि की। सभी ने सामाजिक सेवा के कीर्तिमान स्थापित किये। इस प्रकार के छोटे–छोटे अनेक गुरूकुल इस गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शाखा रूप में प्रस्फटित हुए। यह कहने में किंचित भी अत्युक्ति नहीं कि आज के पब्लिक स्कूल गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का पाश्चात्यीकरण है।

गुरूकुल में स्वदेश–प्रेम, जाति, धर्म संस्कृति पर निष्ठा, आस्तिकता सत्याचारण पर बल दिया जाता रहा। खादी वस्त्रों का पहिरावा, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग किया जाता था।

प्राचीन शिक्षा के साथ–साथ, अंग्रेजी और विज्ञान की शिक्षा आरम्भ हो चुकी थी। शिल्प शिक्षा की व्यवस्था का प्रयत्न आरम्भ कर दिया था। शिक्षा माध्यम हिन्दी थी। विज्ञान की पुस्तकें भी हिन्दी में ही छपा ली गई थीं। विश्व–विद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला इतिहास भारतीयों को भ्रम में डालने वाला है। अंग्रेजों द्वारा खरीदे गये व्यक्तियों द्वारा–अंग्रेजों ने जैसा चाहा, लिखाया। गुरूकुल कांगड़ी में प्रोफेसर रामदेव जी आचार्य की अध्यक्षता में इतिहास प्रकाशित हुआ।

२३ दिसम्बर, १९२६ को एक मुसलमान युवक उनसे इस्लाम धर्म पर चर्चा करने आया। स्वामी जी कुछ दिनों से शैय्या पर बीमार पड़े थे। उसे फिर कभी आने को कहा गया परन्तु स्वामी जी ने उसे बुला लिया। उसने अवसर पाकर स्वामी जी पर पिस्तौल से तीन फायर कर दिय। निःस्वार्थ सेवी, राष्ट्रनायक जन्मजात सफल सेनानी, भारतीय संस्कृति के पुनरूद्धारक जनहितार्थ समर्पित –जीवन दलितोद्धारक, आदर्श कर्मयोगी, ने अपना धन, सम्पत्ति तन–मन तो राष्ट्र को पहले ही समर्पित कर दिये थे। आज इस नश्वर शरीर को भी आहुत कर दिया। उनका पार्थिव शरीर आज हमारे मध्य नहीं है। परन्तु उनके लेख–वाणी और कर्म हमारे मार्ग को प्रशस्त कर रहे हैं। जब तक चांद और सूर्य हैं, उनकी अमर–गाथा जन–मानस को उत्साहित करती रहेगी।

मेरे विचार में यह कहना कुछ अंश में ठीक नहीं कि एक धर्मान्ध मुसलमान ने उनके प्राण हर लिए। अंग्रेज बड़ा चालाक है। अंग्रजों ने ही मुसलमान के माध्यम से उनके प्राण हरण किये हैं। स्वामी जी द्वारा गुरूकुल, स्थापा, शुद्धि आन्दोलन, दलितोद्वार, हिन्दी भाषा का प्रसार आदि किये गये कार्यों से जितना अधिक खतरा अंग्रेजों को था, उतना किसी को नहीं। पहला प्रमाण है उनके बलिदान का दिन वही जो अंग्रेजों के बड़े दिन' का महत्वपूर्ण पर्व है। अर्थात् २३ दिसम्बर।

इस परम ज्योति के ओझल हो जाने से भारतीय जनता ने अंगेजों के जाने का मार्ग प्रशस्त किया। कांग्रेस को आर्य समाज का पूर्ण सहयोग मिला। उनके बलिदान के २१वें वर्ष भारत स्वतन्त्र हो गया और अंग्रेज चला गया।

इस अमर बलिदानी, निर्भीक सन्यासी, गुरूकुल, शिक्षा प्रणाली के संस्थपक, जन्म–जात सफल–सेनानी को हमारा शत्–शत् प्रणाम है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक जागरण के सूत्रधार–

महर्षि दयानन्द सरस्वती

– प्रियवीर हेमाइना

वेदों के अद्वितीय मर्मज्ञ ज्ञाता, व्याख्याता और पुनरूद्धारक तपः पूत आदित्य ब्रह्मचारी, महान योगी, सर्वशास्त्र निष्णात जिनका मानव जाति पर महान् उपकार हैं ऐसे महामनव आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की बोधगाथा अपने आप में, अपूर्व एवं अप्रतिम है। संसार में लोग जागते हैं और पुनः सो जाते हैं। वह अकेला महापुरूष ऐसा था, जो एक बार जागकर कभी सोया नहीं। शिवरात्रि के पर्व पर उन्हें जो बोध हुआ, उस बोध को उन्होंने दिग्दिगन्त तक पहुंचाया।

विश्व में आदि ज्ञान वेद का अनुशीलन अनेक विद्वानों ने किया। कुछ विद्वानों ने वेदों के यज्ञपरक एवं ज्ञान परक अर्थ किए। उन्होंने जीवन के सन्दर्भों को वेदमन्त्रों में देखने का प्रयास नहीं किया। कुछ विद्वानों ने वेद की भाषा को अविकसित अर्धविकसित बताते हुए भारतेत्तर देशों की परम्पराओं, धार्मिक अवधारणाओं और भाषा–विषयक विशेषताओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन की बात कही। कुछ विद्वानों ने वेद–ज्ञान को जादू–टोने और इन्द्रजाल का पिटारा ही घोषित कर दिया। भला हो ऋषिवर देव दयानन्द का, जिन्होंने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान, वैदिक धर्म को शाश्वत, सार्वजनीन तथा वैज्ञानिक सिद्ध करके उसे व्यावहारिक और सामाजिक सन्दर्भों में देखने का सफल प्रयास किया। उन्होंने वेद ज्ञान को आधार बनाकर धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जारण का शंखनाद किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती की दृष्टि के विभिन्न आयाम थे। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में नव जागरण का कार्य किया। पराधीन भारत में 'स्वराज का मंत्र' देने वाले वही थे। कोई कितना भी करे किन्तु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है। पर्याप्त समय से भारत से भारत में वेद का पठन–पाठन और प्रचार अविरूद्ध हो गया था। लोग एक प्रकार से वेद को भूल सा गए थे उन्होंने बताया कि वेद भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण ऊँची शिक्षाएं देने वाले महान ग्रंथ हैं। उनके वेद भाष्य समाज के लिए कल्याणकारी तथा नव मार्ग प्रशस्त करने वाले हैं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार, विधि, तीनों ग्रन्थ अद्वितीय हैं। सोई हुई आर्य जनता को जगाने वाले तथा उन्हें प्रगति के पथ पर ले जाने वाले हैं। उन्होंने समग्र जीवन जन जागरण के कार्य में उनका वेद का अनुशीलन तर्कानुमोदित तथा प्रमाण–परिपुष्ट हैं।

जब ऋषिवर अध्ययन समाप्त करके स्वामी विरजानन्द की पाठशाला से जाने लगे तो उन्होंने गुरू दक्षिणा के रूप में आधा सेर लौंग भेंट किए। इस पर स्वामी विरजानन्द जी ने कहा 'वत्स! भारत से वेदों का पठन–पाठन और ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्ययन लुप्त हो चला है, प्रचार–प्रसार की बात तो दूर है, जिसके परिणाम स्वरूप लोग घोर ज्ञानान्धकार में भटक रहे हैं। वेदों के और ऋषिकृत ग्रन्थों के अध्ययन की परिपाटी लुप्त हो जाने से मानव जाति अंधकार में भटक रही है। तुम प्रतिज्ञा करो कि तुम वेदों का तथा वेदादि ग्रन्थों के ज्ञान का पुनरूद्धार करोगे तथा वेदादि ग्रन्थों के ज्ञान का प्रचार–प्रसार करोगे। सन्यासी दयानन्द ने अपनी गुरू की आज्ञा को शिरोधार्य किया। उन्होंने अपना समग्र जीवन वेदों के प्रचार–प्रसार में लगाया।

उन्होंने वेदाध्ययन के द्वारा स्त्रियों के लिए तथा अन्य सभी के लिए खोलने के वेद सम्मत तर्क दिए। तथाकथित अस्पृश्यों के लिए सम्मान पूर्वक जीवन यापन का रास्ता दिखाया। जाति–पाति के भेद भाव को समाप्त करने की बात कही। असंख्य देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना के स्थान पर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, जगन्नियन्ता, सृष्टि के पालक, दया के सागर, न्यायकारी परमपिता परमात्मा की उपासना करने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि सभी उसी परमात्मा की विभिन्न शक्तियां है। एक सद्विप्रा–बहुधा वदन्ति' (ऋग् १.६१.६४. ६६) के आधार पर यह सिद्ध किया।

अग्नि, वायु, आदित्य चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आप और प्रजापति। ये सब नाम उसी एक परमात्मा के हैं। (यजु ३२.१)। उन्होंने पूर्वजन्म के सिद्धान्त को सत्य घोषित किया (अथर्व १०.८. २७) मुक्ति से पुनरावर्तन के सिद्धान्त को भी उन्होंने परिपुष्ट किया (ऋग् ९.११३.६–११) स्वमंत व्यामंतव्य प्रकाश में उन्होंने कहा कि 'स्वर्ग' नाम सुख विशेष भोग और उसको प्राप्ति का है। ऋषि का यह मन्तव्य भी वेदानुमोदित है (अथर्व ६.१२०.३)।

महर्षि दयानन्द ने आजीवन वेदप्रचार किया। उन्होंने समाज सुधार के अनेक कार्य किए। उन्होंने समाज सुधार के अनेक कार्य किए। गली–सड़ी कुरीतियों और अज्ञान की रूढ़ियों के उन्मूलन का कार्य किया। उन्होंने बताया कि वेद मानव मात्र का धर्म ग्रन्थ है। वेदों में विज्ञान तत्व उपलब्ध हैं। इसको उन्होंने सप्रमाण वेद के आधार पर ही सिद्ध किया। उन्होंने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक माना। उन्होंने वेदों को आध्यात्मिक, अधिभौतिक और आधिदैविक अनेक विध–विद्या विज्ञानों का ग्रन्थ माना।

हमारा कर्तव्य है कि हम भी ऋषि की भांति जाग जाएं तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को कार्य रूप में परिवर्तित कर दे।

टंकारा बोधोत्सव 12,13 एवं 14 फरवरी 2018

प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार १२, १३, १४ फरवरी २०१८ को किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य सामज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें।

आपके आवास (आने की पूर्व सूचना देने पर) एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

–: निवेदक :–

रामनाथ सहगल, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001

आर्य समाज (बाघमण्डी) सुल्तानपुर का वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न।

सुल्तानपुर आर्य समाज (बागमण्डी) सुल्तानपुर का दिनांक १२, १३, १४ एवं १५ दिसम्बर, २०१७ को चार दिवसीय वार्षिकोत्सव समारोह हर्ष पूर्वक सम्पन्न हुआ।

उक्त समारोह में महोपदेशक, श्री कड़कदेव आर्य, एवं महोपदेशिका श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार ने अपने वैदिक उपदेशों से आर्यों को मोह लिया एवं कैयी सुल्तानपुर के रामगमन आर्य जी ने भी अपने उपदेश एवं भजन सुनाये।

वार्षिकोत्सव में आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भाग लिया इस अवसर पर शहर में एक शोभा यात्रा भी निकाली गई।

शहीदों को शत–शत नमन

१६ दिसम्बर– आर्य समाज एवं शहीद स्मृति संस्थान मझोला पीलीभीत के द्वारा शहीद स्मारक पर काकोरी कांड के शहीदों, रामप्रसाद विस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, शहीद अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये व मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि दी गई।

मझोला आर्य समाज के प्रधान एवं शहीद स्मृति संस्थान के संस्थापक डाक्टर डोरी लाल वर्मा ने शहीदों के क्रान्तिकारी जीवन पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि शहीद श्री राम प्रसाद विस्मिल आर्य समाजी थे और आर्य समाज मंदिर में रह कर स्वातंत्र्य समर में अपना योगदान देते थे आर्य समाज मंदिर में नित्य प्रतिदिन यज्ञ किया करते थे। अपने क्रान्तिकारी साथियों के साथ मिलकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देश को आजाद कराने के लिए अपना योगदान करते थे। उन्होंने बातया कि काकोरी के पास ट्रेन से सरकारी खजाना लूट कर राम प्रसाद विस्मिल ने अंग्रेजी हुकूमत की जड़े हिला दी थी, काकोरी केश में अपराधी बनाकर अंग्रेज सरकार ने राम प्रसाद विस्मिल को गोरखपुर जेल में, अशफाक उल्ला खां को फैजाबाद में, ठाकुर रोशन सिंह को मलाका जेल इलाहाबाद में और राजेन्द्र लाहिड़ी को गोंडा जेल में फांसी देकर शहीद कर दिया गया था।

शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए देवेन्द्र कुमार वर्मा, सुबोध अवस्थी, संजीव प्रताप सिंह, गुलशन स्वर्णकार, दीपक जिन्दल, जसवंत सिंह, राजकुमार सिंह, विजय भाटिया, नितेश अग्रवाल, कपिल अग्रवाल, अजय गोयल, एवं नीवन चेयरमैन मुन्ने खां आदि महानुभाव उपस्थित थे।

ओ३म्

संस्थापित–1885 फोन
नं0–0522–2286328
श्रीमद्दयानन्दाब्द–193

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक– 27, 28 जनवरी, 2018 तद्नुसार
दिन– शनिवार एवं रविवार
(तिथि–माघ शुक्ल दशमी एवं एकादशी) सम्वत्–2074)

अधिवेशन स्थल– सभा भवन प्रांगण– 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

समस्त पदाधिकारी/अन्तरंग सदस्य/प्रतिनिधि/आर्य बन्धुओं/ बहिनों,

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो–दिवसीय अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक 27, 28 जनवरी, 2018 तद्नुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में प्रातः 08.00 बजे से सायं 06.00 बजे तक डॉ0 धीरज सिंह–का0 प्रधान/प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों/जिला सभाओं/शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेजे दिये गये हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त स्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में का0 प्रधान/प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः–

(क) आर्य समाज के सभासद/सदस्यों का रू0 5/– प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।

(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः– दुकानों/भवनों/अतिथि गृहों/ विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, किसी विक्रय से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश।

(ग) सूदकोटि के रूप में रू0 25/–।

(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य/सभासद रू0 2/– वार्षिक।

(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू0 25/– इसमें किसी भी समाज के पहले 11 सदस्य पर 1, 31 सदस्य पर 2 एवं प्रत्येक अगले 20 सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।

(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू0 100/– अथवा आजीवन शुल्क के रूप में 1000/– के हिसाब से।

(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू0 100/– दशांश एक मुश्त तथा रू0 100/– आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू0 25/– भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।

(झ) प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम 11 समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी। इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक–15 जनवरी, 2018 तक अवश्य जमा करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। **बैंक ड्राफ्ट, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ** के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें। जिन समाजों को वार्षिक चित्र प्राप्त न हो, वे समाजें सभा के उपरोक्त फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेशनीय एजेण्डा नियमानुसार समय से भेज दिये जायेंगे।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक/प्रतिनिधियों के ठहरने एवं भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

(डॉ0 धीरज सिंह)	(अरविन्द कुमार)	(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा प्रधान	कोषाध्यक्ष	सभा मन्त्री

वेद ज्ञान से जाने भारतीय संस्कृति को : नायडू

नई दिल्ली उपराष्ट्रपति एम. वैकैंया नायडू ने कहा है कि वेद न केवल ज्ञान का आधार है बल्कि भारत और भारतीय संस्कृति को जानने का सबसे बेहतर माध्यम भी है। वेद में जाति समुदाय का कोई जिक्र नहीं है बल्कि विश्व शान्ति, धार्मिक समरसता, भाई चारे और सबके कल्याण का संदेश हमारा वेद ज्ञान देता है। यह ही बात भारतीय संस्कृति में भी है।

विश्व वेद के सम्मेलन के शुभारम्भ पर उपराष्ट्रपति नायडू ने कहा कि मनवता के लिए वेद का ज्ञान आज भी प्रासंगिक है। ऋग्वेद के मंत्रों को बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमारे समाज में कोई छोटा या बड़ा नहीं होता है। वेद का ज्ञान सभी मनुष्यों के लिए है, वेदों में हमारी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता छिपी हुई है। जिसमें साफ तौर पर विश्व बन्धुत्व की भावना विद्यमान है। साथ ही उच्च नैतिक आर्दश बनाये रखने में भी हमारा वेद ज्ञान ममदगार साबित होता है। वेदों में मनुष्य मात्र को यह संदेश दिया गया है कि मनुष्य सच्चे अर्थों में मानव बने। उन्होंने कहा कि वेदों के प्रचार प्रसार पर और अधिक काम किए जाने की आवश्यकता है। स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि समाज में व्याप्त जातिवाद आर्थिक असमान्ता व अन्य गम्भीर मुद्दों का समाधान वेदों में है। तीन दिन तक चलने वाले कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मंत्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य वागीश जी गुरूकुल ऐटा प्रोफेसर विट्ठल राव, डा० महावीर मीमांसक, डॉ० सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), डॉ० नन्दिता शास्त्री (गुरूकुल वाराणसी), डा० पवित्रा वेदालंकार गुरूकुल शासनी (अलीगढ़) आदि विद्वान वेद सम्मेलन में विद्वान उपस्थित रहे।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सें,
.....
.....

विश्ववेद सम्मेलन तथा आर्य समाज सुल्तानपुर, एवं आर्य समाज मझोला (पीलीभीत) तथा अन्य कार्यक्रमों की झलकियां

काकोरी काण्ड के संस्मरण.....

–संकलन, आचार्य कुलदीप

पं० रामप्रसाद बिस्मिल जी का जन्म उत्तर प्रदेश में स्थित शाहजहांपुर में ११ जून १८९७ ई० को हुआ था। इनके पिता का नाम मुरलीधर तथामाता का नाम मूलमती था। इनके घर की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी। बालकपन से ही इन्हें गाय पालने का बड़ा शौक था। बाल्यकाल में बड़े उदण्ड थे। पांचवी में दो बार अनुत्तीर्ण हुए। थोड़े दिनों बाद घर से चोरी भी करने लगे तथा उन पैसों से गंदे उपन्यास खरीदकर पढ़ा करते थे, भंग भी पीने लगे। रोजाना ४०–५० सिगरेट पीते थे। एक दिन भांग पीकर संदूक से पैसे निकाल रहे थे, नशे में होने के कारण संदूकची खटक गई। माता जी ने पकड़ लिया व चाबी पकड़ी गई। बहुत से रूपये व उपन्यास इनकी संदूक से निकले। किताबों से निकले उपन्यासादि उसी समय फाड़ डाले गए व बहुत दण्ड मिला। (परमात्मा की कृपा से मेरी चोरी पकड़ ली गई, नहीं तो दो–चार साल में न दीन का रहता न दुनिया का– आत्मचरित्र)।

परंतु विधि की लीला और ही थी। एक दिन शाहजहांपुरा में आर्यसमाज के एक बड़े सन्यासी स्वामी रामदेव जी आए। बिस्मिल जी का उनके पास आना–जाना होने लगा। इनके जीवन ने पलटा खाया, बिस्मिल जी आर्यसमाजी बन गए और ब्रह्मचर्य का पालन करने लगे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी भाई परमानन्द जी की लिखी पुस्तक तवारीखे हिन्द पढ़कर बिस्मिल जी बहुत प्रभावित हुए। पं० रामप्रसाद ने प्रतिज्ञा की ब्रिटिश सरकार से क्रांतिकारियों पर हो रहे अत्याचार का बदला लेकर रहूंगा।

गुरू कौन था?– फांसी से पूर्व बिस्मिल जी नित्य जेल में वैदिक हवन करते थे। उनके चेहरे पर प्रसन्नता व संतोष देखकर जेलर ने पूछा की तुम्हारा गुरू कौन है? बिस्मिल जी ने कहा कि जिस दिन उसे फांसी दी जाएगी, उस दिन वह अपने गुरू का नाम बताएगा, और हुआ भी ऐसा ही। फांसी देते समय जेलर ने जब अपनीबात याद दिलाई तो बिस्मिल जी ने कहा कि मेरा गुरू है स्वामी दयानन्द।

आर्य समाज के कट्टर अनुयायी और पिता से विवाद– स्वामी दयानन्द जी की बातों का राम प्रसाद पर इतना गहरा प्रथाव पड़ा कि ये आर्य समाज के सिद्धान्तों को पूरी तरह से अनुसरण करने लगे और आर्य सामज के कट्टर अनुयायी बन गये। इन्होंने आर्य समाज द्वारा आयोजित सम्मेलनों में भाग लेना शुरू कर दिया। इन सम्मेलनों में जो भी सन्यासी महात्मा आते रामप्रसाद उनके प्रवचनों को बड़े ध्यान से सुनकर उन्हें अपनाने की पूरी कोशिश करते।

बिस्मिल का परिवार सनातन धर्म में पूर्ण आस्था रखता था और इनके पिता कट्टर पौराणिक थे। उन्हें किसी बाहर वाले व्यक्ति से इनके आर्य समाजी होने का पता चला तो उन्होंने खुद को बड़ा अपमानित महसूस किया। क्यों कि वो रामप्रसाद के आर्य समाजी होने से पूरी तरह से अनजान थे। अतः घर आकर उन्होंने इनसे आर्य समाज छोड़ देने का लिय कहा। लेकिन बिस्मिल ने अपने पिता की बात मानने के स्थान पर उन्हें उल्टे समझाना शुरू कर दिया। अपने पुत्र को इस तरह बहस करते देखा वो स्वयं को और अपमानित महसूस करने लगे।

उन्होंने क्रोध में भर कर इनसे कहा– "या तो आर्य समाज छोड़ दो या मेरा घर छोड़ दो।" इस पर बिस्मिल ने अपने सिद्धान्तों पर अटल रहते हुए घर छोड़ने का निश्चय किया और अपने पिता के पैर छूकर उसी समय घर छोड़कर चले गये। इनका शहर में कोई परिचित नहीं था जहां ये कुछ समय के लिए रह सके, इसलिये ये जंगल की ओर चले गये। वहीं इन्होंने एक दिन और एक रात व्यतीत की। इन्होंने नदी में नहाकर पूजा अर्चना की। जब इन्हें भूख लगी तो खेत से हरे चने तोड़कर खा लिये।

दूसरी तरफ इनके घर से इस तरह चले जाने पर घर में सभी परेशान हो गये। मुरलीधर को भी गुस्सा शान्त होने पर अपनी गलती का अहसास हुआ और इन्हें खोजने में लग गये। दूसरे दिन शाम के समय जब ये आर्य समाज मंदिर पर स्वामी अखिलानन्द जी का प्रवचन सुन रहे थे इनके पिता दो व्यक्तियों के साथ वहां गये और इन्हें घर ले आये। तब से उनके पिता ने उनके क्रांतिकारी विचारों का विरोध करना बन्द कर दिया।

फांसी का दिन– १६ दिसम्बर को फांसी वाले दिन प्रातः ३ बजे बिस्मिल जी उठते हैं। शौच, स्नान आदि नित्य कर्म करके यज्ञ किया। फिर ईश्वर स्तुति करके वन्देमातरम् तथा भारत माता की जय कहते हुए वे फांसी के तख्ते के निकट गए। तत्पश्चात् उन्होंने कहा– मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।" फिर पं० रामप्रसाद बिस्मिल जी तख्ते पर चढ़े और 'विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि...' 'वेद मंत्र का जाप करते हुए फंदे से झूल गए।

ऐसी शानदार मौत लाखों में दो–चार को ही प्राप्त हो सकती है। स्वातंत्रय वीर पं० रामप्रसाद बिस्मिल जी के इस महान बलिदान ने भारत की आजादी की क्रांति को और तेज कर दिया। बाद में चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू व सुखदेव जैसे हजारों देशभक्तों ने उनकी लिखी अमर रचना 'सरफ़रोशी की तमन्ना' गाते हुए अपने बलिदान दिये। पं० रामप्रसाद बिस्मिल आदर्श राष्ट्रभक्त तथा क्रांतिकारी साहित्यकार के रूप में हमेशा अमर रहेंगे।

सृष्टि संवत् 1960853118 ओ३म् दयानन्द 194
।।कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।। 0542-2411720
आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी
का 81 वाँ वार्षिकोत्सव
दिनांक 28 से 31 दिसम्बर 2017
तदनुसार पौष शुक्ल 10 से 13 दिन- गुरुवार से रविवार तक सम्वत् 2074
स्थान- पटेल धर्मशाला, तेलियाबाग, वाराणसी
- निवेदक -
प्रधान लक्ष्मी नारायण आर्य मो. 9670402881
मंत्री अखिलेश आर्य मो. 9451119659
प्रचार मंत्री दिलीप कुमार आर्य मो. 8687221467
कोषाध्यक्ष जयप्रकाश आर्य मो. 9450871434

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।